Name – (Dr) D. N. Singh
Designation – Associate Professor
Deptt – Political Science
Paper – Political Thought
MA – Pol-Sc – 1st Sem

Topic – Aristotle as a critic of Plato
Date – 07-11-2020

अरस्तू : प्लेटो के आलोचक के रूप में

ARISTOTLE AS A CRITIQUE OF PLATO

[illegible] 'रिपब्लिक' [illegible]

अरस्तू द्वारा 'रिपब्लिक' के विचारों की आलोचना—[illegible]

अरस्तू द्वारा प्लेटो के साम्यवाद सम्बन्धी विचार की आलोचना—[illegible] अरस्तू की मान्यता है कि राज्य के अस्तित्व के लिए [illegible] नहीं किया जाए [illegible] अरस्तू के दृष्टिकोण से [illegible] साम्यवादी व्यवस्था में [illegible] इसी प्रकार [illegible] अरस्तू के अनुसार [illegible] प्लेटो यह समझता है कि राज्य [illegible] अरस्तू का मत है कि [illegible] आवश्यक है कि परिवार [illegible] इसके अतिरिक्त अरस्तू साम्यवाद की आलोचना इस आधार पर भी करता है कि यह व्यवस्था केवल [illegible] लिए क्यों लागू की गयी है। [illegible] बन सकते हैं।

अरस्तू के अनुसार व्यावहारिकता की दृष्टि से भी परिवार के साम्यवाद को अरस्तू उचित नहीं मानता। अरस्तू के अनुसार परिवार आत्मा की अभिव्यक्ति तथा यौन-सम्बन्ध के नियमानुसार संचालन के लिए एक अनुमोदित संस्था है। प्लेटो भूल जाता है कि यह एक व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता का परिणाम है। साम्यवादी व्यवस्था में परस्पर सम्बन्ध न होने से चोरी, हत्या आदि अपराध भी अधिक होंगे। "इस समाज में, जिसमें अपने तथा अन्य व्यक्तियों के साथ प्राकृतिक और सामाजिक रिश्तों का ज्ञान है, ऐसे अपराध कम

होते हैं। परन्तु उस समाज में, जहां सम्बन्ध होते ही नहीं ऐसी घटनाएं और ऐसे अपराध बहुत अधिक हो जाएंगे।" (अरस्तू)

प्लेटो ने पशु जगत से सादृश्य ढूंढकर उसके आधार पर स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों को अवलम्बित करने की जो चेष्टा की है, उसको भी अरस्तू ने अनुचित माना है क्योंकि पशु जगत एवं मानव जगत के बीच व्यवहार एवं उससे निकलने वाले परिणामों में बड़ा अन्तर है। पशु जगत में जहां मादाओं के किसी भी प्रकार के पारिवारिक कर्तव्य नहीं होते, वहां मानव जगत में स्त्रियों के साथ पारिवारिक कर्तव्य अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं, जिनका समुचित रूप से निर्वाह किया जाना अत्यन्त आवश्यक माना गया है। साथ ही इन पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वाह करना स्त्रियों की सहज प्रकृति भी है। अरस्तू के अनुसार उन्हें कतिपय राजनीतिक प्रकृति के कर्तव्यों के निर्वाह के लिए इतनी निर्दयता से पारिवारिक कर्तव्यों से मुक्त कर देना उचित नहीं है।

अरस्तू द्वारा सम्पत्ति के साम्यवाद सम्बन्धी विचार की आलोचना—अरस्तू ने यह माना है कि प्लेटो सम्पत्ति के सामूहिक स्वामित्व तथा सामूहिक उपभोग का समर्थक है, अतः अपनी आलोचना में पहले उसने इस प्रकार की व्यवस्था की त्रुटियों का उल्लेख किया है और उसके बाद सम्पत्ति सम्बन्धी उस व्यवस्था के गुणों का उल्लेख किया है जिसे वह स्वयं उचित मानता है।

अरस्तू के अनुसार सम्पत्ति के सामूहिक होने की अवस्था में जो व्यक्ति कठोर परिश्रम करने वाले होंगे, उन्हें यह शिकायत होगी कि उन्हें अपने परिश्रम के अनुपात में कम प्रतिफल मिलता है और कम परिश्रम करने वालों को अधिक प्रतिफल मिलता है। मनुष्य तभी अधिक क्षमता और परिश्रम के साथ कार्य करते हैं जब उन्हें वैयक्तिक लाभ की प्राप्ति की सम्भावना होती है। अरस्तू के अनुसार सामूहिक सम्पत्ति और सामूहिक उपभोग सब प्रकार के झगड़ों की जड़ होते हैं।

प्लेटो द्वारा प्रतिपादित सम्पत्ति सम्बन्धी व्यवस्था की आलोचना करते हुए अरस्तू निजी सम्पत्ति के औचित्य को स्वीकार करता है। उसके अनुसार निजी सम्पत्ति सद्जीवन का एक आवश्यक तत्व है। सम्पत्ति के आधार पर ही व्यक्ति का आधार सम्भव है। यह परिवार के अस्तित्व और उसके सुचारू संचालन के लिए अपरिहार्य है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता तथा योग्यताओं का विकास करने के लिए कुछ वैयक्तिक सम्पत्ति अवश्य मिलनी चाहिए, यदि यह उसे न दी जाए तो उसका विकास अवरुद्ध होगा तथा अन्ततोगत्वा इससे राज्य को हानि उठानी पड़ेगी।

अरस्तू द्वारा दार्शनिक शासक सम्बन्धी विचार की आलोचना—प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य में शासन की बागडोर एक दार्शनिक शासक के हाथ में सौंपने की व्यवस्था की है। प्लेटो के राजनीतिक दर्शन का सार यही है कि दार्शनिक शासक (विवेकपूर्ण शासन) के हाथों में राज्य के संचालन की सर्वोच्च सत्ता होने से ही आदर्श राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण हो सकता है। प्लेटो की दार्शनिक शासक सम्बन्धी अवधारणा से अरस्तू कदापि सहमत नहीं है। उसकी स्पष्ट मान्यता है कि 'कानून का शासन' किसी एक नागरिक के शासन से अधिक वांछनीय है।

अरस्तू द्वारा 'लॉज' की आलोचना—'लॉज' में अभिव्यक्त विचारों का अरस्तू पर गहरा प्रभाव पड़ा है तथापि अरस्तू ने इसकी कड़ी आलोचना भी की है। अरस्तू तो यहां तक कहता है कि कतिपय विषयों को छोड़कर दोनों ग्रन्थों ('रिपब्लिक' तथा 'लॉज') में एक ही कथानक है। अरस्तू के अनुसार 'लॉज' में नागरिकों की संख्या 5,000 निर्धारित की गयी है जो अत्यधिक है, 'लॉज' में उसने राज्य के लिए विदेश सम्बन्धों की आवश्यकता तथा महत्व की उपेक्षा की है। अरस्तू यह भी कहता है कि 'लॉज' में शासक एवं शासितों में अन्तर करने का कोई आधार निश्चित नहीं किया है, सम्पत्ति के बारे में स्पष्ट विचार प्रकट नहीं किये हैं।

निष्कर्ष—प्लेटो तथा अरस्तू के विचारों में अनेक मौलिक समानताएं और असमानताएं हैं। इस सम्बन्ध में **प्रो. बार्कर** ने लिखा है, "अरस्तू की दार्शनिक परिधियां प्लेटो के ही समान हैं जहां प्लेटो अपने पूर्व निश्चित सिद्धान्तों के आधार पर एक योजनाबद्ध राज्य की रचना करने पर आमादा है और व्यावहारिक आपत्तियों को निरर्थक समझकर उनकी ओर अधिक ध्यान नहीं देता, वहां अरस्तू अपनी मान्यताओं को तथ्यों की कसौटी पर बराबर कसता रहता है।" **मैक्सी** के शब्दों में, "प्लेटो का राज्य अमूर्त विचारों का एक ढांचा है जिसे यथार्थ रूप एक दार्शनिक राजा देगा जो अपने सामने वर्तमान सभी संस्थाओं को जड़ से उखाड़ फेंकेगा और संततिशास्त्र तथा शिक्षा द्वारा एक विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था में मनुष्यों की एक नवीन तथा बेहतर जाति

उत्पन्न करेगा अरस्तू का भवन उस सामग्री से बना है जो पहले से ही मौजूद है, जिसे उन्हीं [illegible] जा चुका है और जिसे कोई भी बुद्धिमान राजनीतिज्ञ प्रयोग कर सकता है, जो कि आदर्श से भिन्न [illegible] नमूना तैयार करना चाहे तो भी दोनों विचारकों में एक सा ही नैतिक जोश है, एक-सी ही व्यवस्था की [illegible] एक-सा ही सन्तुलन का प्रेम, एक-सी ही न्याय तथा बुद्धि के प्रति आस्था, एक-सी ही शिक्षा में विश्वास एक-सी ही मानवता में आस्था तथा शुभ जीवन की प्राप्ति के लिए एक-सी ही चिन्ता दिखाई पड़ती है।"

प्लेटो और अरस्तू की तुलना करते समय प्रायः दो निष्कर्ष निकाले जाते हैं—प्रथम, प्रत्येक व्यक्ति या तो प्लेटोवादी हो सकता है या अरस्तूवादी। द्वितीय, अरस्तू सबसे बड़ा प्लेटोवादी है। वस्तुतः दोनों ही विचार एकपक्षीय हैं। प्लेटो और अरस्तू एक-दूसरे के विरोधी नहीं थे। वस्तुस्थिति यह है कि उनका विरोध ऊपरी [illegible] अरस्तू के सिद्धान्त भी आदर्श अथवा श्रेष्ठ राज्य के विचार पर आधारित हैं, उसने अपने आदर्श को केवल प्लेटो की काल्पनिकता और अव्यावहारिकता से मुक्त कर दिया है। **प्रो. डनिंग** ने लिखा है—"उसका (अरस्तू) व उसके गुरु प्लेटो का अन्तर उनके विचार के सार का कम व उनके रूप व विधि का अधिक है। वे अधिकतर विचार जो अरस्तू के विचारों में प्रमुख हैं प्लेटो में पाये जाते हैं। पर प्लेटो का उनकी अभिव्यक्ति का [illegible] जहां संकेत, आभास या दृष्टान्तों का है, अरस्तू में वे उन निश्चित व स्पष्ट मान्यताओं के रूप में पाये जाते हैं, जो सामान्य वैज्ञानिक सिद्धान्त की व्यवस्था से पूरी तरह सम्बद्ध हैं। प्लेटो कल्पना प्रधान व संश्लेषणात्मक है। अरस्तू यथार्थवादी एवं विश्लेषणात्मक है।"

विल डूरां के अभिमत में अपनी सत्यान्वेषण की वृत्ति के कारण ही अरस्तू ने प्लेटो की इतनी कड़ी एवं विस्तृत आलोचनाएं की हैं। उसके अनुसार जिस प्रकार ब्रूटस को सीजर कम प्रिय नहीं था उसी प्रकार अरस्तू का कथन है कि उसे प्लेटो प्रिय है, किन्तु सत्य उससे भी अधिक प्रिय है।[1] इबन्सटीन ने इस सम्बन्ध में बड़ी सारपूर्ण बात लिखी है—"प्लेटो के विचारों की कमियों को सुधारने वाला उसका अपना शिष्य ही था।[2]

1 "As Brutus loved not Caesar less but Rome more, so Aristotle says amicus Plato, sed magis veritas—dear is Plato, but dearer still is truth." —Will Durant

2 "Plato Found the corrective to his thinking in his own student." —Ebenstein